

कृषि में महिलाओं की भूमिका

मृदुला, सुमित चौधरी, अरुणिमा पालीवाल और **मोहिनी**

" भारत की कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। महिलाएं फसल उत्पादन, पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी, बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण जैसी गतिविधियों में सक्रिय योगदान देती हैं। इसके बावजूद, भूमि स्वामित्व, ऋण, तकनीक, प्रशिक्षण, बाजार और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सीमित पहुंच के कारण उन्हें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कृषि में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को देखते हुए भूमि अधिकार, वित्तीय समावेशन, कौशल विकास, आधुनिक तकनीक और स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देना आवश्यक है। महिला किसानों का सशक्तिकरण खाद्य सुरक्षा, कृषि उत्पादकता, लैंगिक समानता और सतत ग्रामीण विकास को मजबूत कर सकता है। "

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था और ग्रामीण जीवन का प्रमुख आधार है। महिलाएं कृषि, पशुपालन, मत्स्य पालन, वानिकी और खाद्य प्रसंस्करण में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। महिलाएं कृषि तथा संबंधित क्षेत्रों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कृषि में महिलाओं की बढ़ती भूमिका तेजी से सामने आने लगी है। इसके फलस्वरूप, महिलाएं अब कृषि उत्पादन और घर के काम-काज में अधिक जिम्मेदारी निभा रही हैं। भारत में, कृषि में महिलाएं बढ़-चढ़कर भाग ले रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में 76.9 प्रतिशत महिलाएं के कृषि कार्यों में संलग्न हैं। देश के कृषि कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी 42 प्रतिशत से अधिक है। अपने विशाल योगदान के बावजूद, महिला किसान आमतौर पर अदृश्य बनी रहती हैं।

कृषि भूमि और संसाधनों का स्वामित्व आमतौर पर पुरुषों के पास होता है। ऐसे में इन्हें कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जैसे कि असमान मजदूरी, भूमि स्वामित्व का अभाव और ऋण, प्रौद्योगिकी तथा प्रशिक्षण तक सीमित पहुंच। इसके बावजूद महिलाएं देश की कृषि अर्थव्यवस्था और खाद्य प्रणालियों को सुधारने में अपना सक्रिय योगदान दे रही हैं।

खाद्य और कृषि संगठन ने इस बात पर जोर दिया है कि कृषि क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाने से कृषि उत्पादकता में सुधार हो सकता है और ग्रामीण विकास को मजबूती मिल सकती है। संयुक्त राष्ट्र ने भी

सस्य विज्ञान विभाग, पर्वतीय कृषि महाविद्यालय, चिरबटिया कैम्प, रानीचौरी-249199

सक्रिय भूमिका

विभिन्न विकासशील देशों में, महिलाएं कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। महिलाएं अक्सर फसल उत्पादन, पशुओं की देखभाल, खाद्य प्रसंस्करण, कृषि या अन्य ग्रामीण उद्यमों में श्रम, ईंधन और पानी एकत्रित करना, व्यापार तथा बाजार में शामिल होना, परिवार के सदस्यों की देखभाल एवं अपने घरों को संभालने जैसे कार्य करने में शामिल रहती हैं। इनमें से कई कार्यों को राष्ट्रीय तौर पर आर्थिक रूप से सक्रिय रोजगार के तौर पर परिभाषित नहीं किया गया है, लेकिन ग्रामीण परिवारों के लिए ये महत्वपूर्ण होते हैं।



ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती का आधार हैं कृषक महिलाएं

वर्ष 2026 को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला किसान वर्ष' घोषित किया है।

कृषि में महिलाओं की भागीदारी का बढ़ता स्वरूप और उसका विस्तार, अलग-अलग क्षेत्रों में काफी भिन्न होता है। इन विभिन्नताओं के बावजूद, महिलाएं विभिन्न कृषि गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल रहती हैं। जनगणना वर्ष 2011 के अनुसार यह देखा गया है कि कुल मुख्य कामगार महिलाओं में से 55 प्रतिशत खेतिहर मजदूर और 24 प्रतिशत कृषक थीं। हालांकि, कुल खेतों में से केवल 12.8 प्रतिशत पर ही महिलाओं का स्वामित्व था, जो लैंगिक असमानता को दर्शाता है।

देश में महिलाओं का श्रमिक जनसंख्या अनुपात 24 प्रतिशत है, जो पुरुषों (54.4 प्रतिशत) की तुलना में कम है। ग्रामीण महिलाओं के लिए कार्यबल में भागीदारी की दर 30.5 प्रतिशत है, जबकि शहरी महिलाओं के लिए यह दर 20.20 प्रतिशत है। वार्षिक आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण रिपोर्ट वर्ष 2022-23 के अनुसार, कृषि क्षेत्र में महिला कामगारों का अनुमानित प्रतिशत वितरण सबसे अधिक था, अर्थात 64.3 प्रतिशत; जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में यह 76.2 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 11.7 प्रतिशत रहा।

खेतिहर महिलाएं

महिलाएं खेती-बाड़ी से जुड़ी लगभग सभी गतिविधियों में संलग्न रहती हैं-भूमि तैयार करने से लेकर फसल कटाई एवं प्रसंस्करण तक।

फसल उत्पादन

महिलाएं बीज बुआई, पौधे लगाने, खरपतवार हटाने, सिंचाई करने, फसल काटने, गहाई करने और फसल रखरखाव जैसे कार्यों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेती हैं। इनके पास बीज संभालकर रखने, मृदा की उर्वराशक्ति बनाए रखने और टिकाऊ खेती के तरीकों से जुड़ा पारंपरिक ज्ञान होता है।

देश के कई क्षेत्रों में, अब महिलाएं अकेले ही खेतों का काम संभाल रही हैं। इस बदलाव से खेती से जुड़े फैसले लेने में महिलाओं की जिम्मेदारियां और बढ़ गई हैं।



खेती-बाड़ी में महिलाओं की भूमिका

पशुधन प्रबंधन

पशुपालन ग्रामीण महिलाओं द्वारा किए जाने वाले सबसे जरूरी सहायक कार्यों में से एक है। महिलाएं पशुओं को चारा खिलाने, उनके रहने की जगह साफ करने, दूध दोहन, चारा तैयार करने और दूध से बने उत्पादों को बेचने जैसे महत्वपूर्ण कार्य करती हैं। हमारे देश का डेरी क्षेत्र काफी हद तक महिलाओं की मेहनत पर ही निर्भर है। महिलाएं कुक्कुट पालन, बकरी पालन और भेड़ पालन में भी अहम योगदान देता हैं। इन कार्यों से ग्रामीण परिवारों को अतिरिक्त आमदनी होती है और इन्हें पोषण सुरक्षा भी मिलती है।

मत्स्य पालन और जलीय कृषि

समुद्र के किनारे और नदियों वाले क्षेत्रों में, महिलाएं मछलियों के प्रसंस्करण, इन्हें सुखाने, पैकिंग और विपणन के कार्य में संलग्न हैं। जलीय कृषि में, महिलाएं तालाबों के रखरखाव, मछलियों को चारा खिलाने और हैचरी को संभालने में हिस्सा लेती हैं। इनका यह योगदान मछली पकड़ने वाले समुदायों के लिए रोजगार उत्पन्न करने और आहार की सुरक्षा सुनिश्चित करने में मददगार होता है।

वानिकी और कृषि वानिकी

वन से जलावन, पशुओं का चारा, जड़ी-बूटियां और जंगल से मिलने वाले अन्य उत्पाद (जो लकड़ी से नहीं बने होते) एकत्रित करने में महिलाएं एक बड़ी भूमिका निभाती हैं। अपने पारंपरिक पर्यावरणीय ज्ञान के जरिए, वे पर्यावरण को बचाने और जैव

विविधता की रक्षा करने में योगदान देती हैं। महिलाएं कृषि वानिकी प्रणाली में भी हिस्सा लेती हैं। इसमें वृक्षों का फसलों और पशुपालन के साथ आपसी समन्वय होता है।

खाद्य प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन

फसल कटाई उपरांत प्रबंधन-जैसे कि कृषि उत्पादों की सफाई, छंटाई, सुखाना, प्रसंस्करण, पैकिंग करना और संभालकर रखना जैसे कार्यों में महिलाएं बड़े पैमाने पर योगदान देती हैं। कई ग्रामीण महिलाएं स्वयं सहायता समूहों और ग्रामीण उद्यमों के जरिए अचार, पापड़, मसाले, डेरी उत्पाद और श्री अन्न से बने खाद्य उत्पाद बनाने के काम में लगी हुई हैं। इन कार्यों से परिवार की आमदनी बढ़ती है और फसल कटने के बाद होने वाला नुकसान भी कम होता है।

आहार की सुरक्षा और पोषण में योगदान

महिलाएं घर के आंगन में सब्जियों के बगीचे लगाकर, बीजों को के संरक्षण और पौष्टिक आहार बनाकर परिवार के लिए आहार की सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं। ग्रामीण परिवारों में, खाद्य उत्पादों में विविधता बनाए रखने में इनकी भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है।

अन्य क्षेत्रों में भूमिका

महिलाओं का योगदान खेती से आगे बढ़कर कई ऐसे क्षेत्रों तक प्रसारित हुआ है जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाते हैं।

डेरी क्षेत्र: भारत में डेरी उद्योग काफी हद तक महिलाओं पर निर्भर है। महिलाएं दूध दोहन, मवेशियों को चारा खिलाने, गोबर के उपले बनाने और दूध से बने उत्पादों बेचने जैसे कार्य करती हैं।

बागवानी: महिलाएं फल और सब्जियों की खेती, फूलों की खेती, मशरूम की खेती और नर्सरी प्रबंधन में काफी सक्रिय योगदान दे रही हैं। बागवानी वर्षभर रोजगार के अवसर प्रदान करती है और परिवार के पोषण को बेहतर बनाने में मदद करती है।

रेशम उत्पादन: कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और पश्चिम बंगाल में महिलाएं रेशम उत्पादन से जुड़ी गतिविधियों में काफी योगदान देती हैं। इनमें रेशम के कीट पालन, कोकून का प्रसंस्करण करना और रेशम की बुनाई शामिल है।

मधुमक्खी पालन: महिलाओं के स्वयं-सहायता समूह तेजी से मधुमक्खी पालन में शामिल हो रहे हैं, जिससे आय अर्जन और जैव विविधता के संरक्षण में मदद मिलती है।



फसलोत्पादन में महिलाओं की अहम भागीदारी

ग्रामीण उद्यमिता: सरकारी योजनाओं और स्वयं-सहायता समूहों ने महिलाओं को कृषि-उद्यमी बनने के लिए प्रोत्साहित किया है। अब कई महिलाएं लघु खाद्य प्रसंस्करण इकाई, ऑर्गेनिक फार्म, बीज बैंक और कृषि से जुड़े स्टार्टअप का संचालन कर रही हैं।

चुनौतियां

अपने महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, महिला किसानों को निम्न सामाजिक-आर्थिक और संस्थागत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

भूमि स्वामित्व

भू-स्वामित्व सबसे बड़ी बाधाओं में से एक बना हुआ है। भारत में कृषि योग्य भूमि का स्वामित्व में महिलाओं का प्रतिशत बहुत कम है। भू-स्वामित्व का सीधा संबंध कर्ज, सब्सिडी और सरकारी योजनाओं तक पहुंच से होता है, इसलिए महिलाएं अक्सर संस्थागत लाभों से वंचित रह जाती हैं।

असमान मजदूरी

खेतिहर महिला श्रमिकों को अक्सर पुरुषों की तुलना में समान काम के लिए कम मजदूरी मिलती है। ग्रामीण श्रम बाजारों में लैंगिक आधारित मजदूरी असमानता अभी भी बनी हुई है।

कर्ज और तकनीक तक सीमित पहुंच

जागरूकता की कमी के कारण महिला किसानों को कर्ज, फसल बीमा, मशीनरी और कृषि सामग्री प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। विस्तार सेवाएं और प्रशिक्षण कार्यक्रम अक्सर पुरुष प्रधान होते हैं।

कार्य दबाव

महिलाएं खेती से जुड़े कार्य और घर-परिवार की देखभाल, जैसी दोहरी जिम्मेदारियां निभाती हैं। काम के लंबे घंटों के कारण उन्हें शारीरिक थकावट और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

फैसले लेने की सीमित शक्ति

कई घरों में, महिलाएं खेती-बाड़ी में काफी योगदान देती हैं, लेकिन जमीन के इस्तेमाल, फसल चयन, बाजार और लेन-देन से जुड़े फैसलों से उन्हें अक्सर दूर रखा जाता है।

शिक्षा और प्रशिक्षण की कमी

साक्षरता का कम स्तर और तकनीकी प्रशिक्षण की कमी, महिलाओं की आधुनिक कृषि पद्धतियों और डिजिटल तकनीकों को अपनाने की क्षमता को कम कर देती है।

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय दबाव

महिलाएं जलवायु से जुड़े जोखिमों, जैसे-सूखा, बाढ़ और फसल क्षति होने से अत्यधिक प्रभावित होती हैं। वे प्राकृतिक संसाधनों पर बहुत ज्यादा निर्भर रहती हैं, इसलिए प्रतिकूल पर्यावरण से उनकी आजीविका पर गहरा असर होता है।

सरकारी पहल और समाधान

कृषि में महिलाओं की भूमिका को मजबूत करने के लिए, कई नीतिगत उपायों और पहलों की आवश्यकता है।

भू-अधिकारों को सुनिश्चित करना

महिलाओं को संयुक्त स्वामित्व हक और विरासत के अधिकार देने से आर्थिक सुरक्षा और संस्थागत सहायता तक पहुंच बेहतर हो सकती है।

ऋण तक पहुंच और वित्तीय समावेशन

महिला किसानों को संस्थागत ऋण, फसल बीमा और वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों तक आसान पहुंच मिलनी चाहिए। स्वयं-सहायता समूह और सूक्ष्म-वित्त संस्थान ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा दे सकते हैं।

कौशल विकास और प्रशिक्षण

महिलाओं को खेती की आधुनिक तकनीकों, जलवायु अनुकूल कृषि, डिजिटल उपकरणों और कृषि व्यवसाय प्रबंधन में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। कृषि विस्तार सेवाओं को लैंगिक रूप से और अधिक समावेशी बनाना जरूरी है।

समान मजदूरी और सामाजिक सुरक्षा

समान मजदूरी कानूनों और श्रम अधिकारों का सही से पालन करना जरूरी है। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, मातृत्व लाभों और स्वास्थ्य बीमा में महिला कृषि श्रमिकों को भी शामिल किया जाना चाहिए।



युवाओं का बढ़ रहा रुझान

महिला सहकारी समितियों को बढ़ावा

महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियां और उत्पादक संगठन सामूहिक सौदेबाजी, बाजार तक पहुंच और आय सृजन को मजबूत कर सकते हैं।

मशीनीकरण और प्रौद्योगिकी

महिलाओं के अनुकूल कृषि उपकरण और मशीनें उपलब्ध करवाने से मेहनत कम हो सकती है और उत्पादकता बढ़ सकती है।

नेतृत्व और भागीदारी को प्रोत्साहित करना

महिलाओं को स्थानीय शासन संस्थाओं, किसान उत्पादक संगठनों और कृषि नीति-निर्माण में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

जलवायु अनुकूल कृषि

महिलाओं को टिकाऊ कृषि, जल संरक्षण, जैविक खेती और जलवायु अनुकूलन प्रथाओं में प्रशिक्षित करने से पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने की उनकी क्षमता मजबूत हो सकती है।

महिलाएं भारतीय कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। वे खेती-बाड़ी, पशुपालन, मत्स्य पालन, खाद्य प्रसंस्करण और घरेलू पोषण में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। अपनी इस अहम भूमिका के बावजूद, महिला किसानों को आज भी पहचान की कमी, असमान मजदूरी और संसाधनों तक सीमित पहुंच जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

कृषि क्षेत्र में महिलाओं को सशक्त बनाना खाद्य सुरक्षा, गरीबी उन्मूलन और सतत ग्रामीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। महिलाएं कृषि में केवल सहायक ही नहीं हैं; वे स्वयं किसान हैं और राष्ट्र निर्माण में प्रमुख योगदानकर्ता हैं। इसलिए एक अधिक मजबूत और सतत कृषि प्रणाली के लिए उनके योगदान को पहचानना और उसका समर्थन करना अनिवार्य है।



कृषि में महिलाओं की भागीदारी के निर्धारक कारक